विश्व हिंदी समाचार

Vishwa Hindi Samachar

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष : 14 | अंक : 54 | जून, 2021

श्रद्धांजलि

हिंदी जगत् पर कोरोना संकट का त्रासद प्रभाव

वर्ष 2019 से ही कोविद-19 के प्रकोप कारण विश्व भर के लोग तालाबंदी, बिगड़ते स्वास्थ्य तथा मृत्यु के शिकार हुए। सर्वत्र जन-मन अत्यंत पीड़ित हुआ। विश्व में कोलाहल और अव्यवस्था उत्पन्न हुई। इस महामारी की चुनौतियों का सामना करते हुए कई लोग निस्सहाय और परास्त हुए और कई अंतिम समय तक डटकर लड़े। इस अंतराल में विश्व हिंदी जगत् ने अनेक विभूतियों को आहूत होते देखा और उसे अपूरणीय क्षति सहनी पड़ी। विश्व हिंदी समाचार के इस अंक में वर्ष 2021 में अमरत्व को प्राप्त इन महान् विभूतियों को श्रद्धांजलि अर्पित की जा रही है।

पृ. 2-8

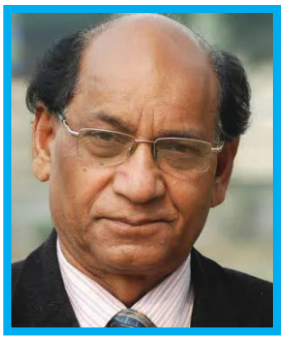

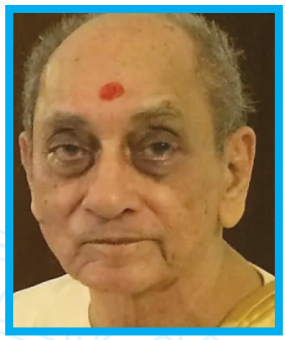

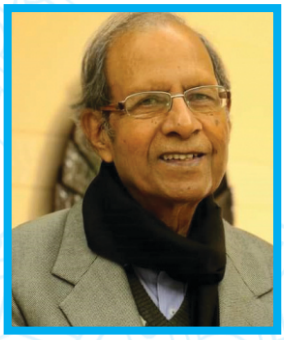

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

इस अंक में आगे पढ़ें :

संगोष्ठी/वेबिनार/वार्ता/परिसंवाद/साहित्य विमर्श/सम्मेलन/कार्यशाला/परिचर्चा पृ. 8-14
लोकार्पण पृ. 14-15
सम्मान एवं पुरस्कार पृ. 15
सूचना पृ. 15
संपादकीय पृ. 16

ISSN 16942485

श्रद्धांजलि

श्रीमती पूनम जुनेजा - पूर्व महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय

3 मई, 2021 को विश्व हिंदी सचिवालय की पूर्व महासचिव, श्रीमती पूनम जुनेजा का 65 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 4 फ़रवरी, 1956 में हुआ था।

आपने अंग्रेज़ी तथा हिंदी में स्नातक तथा अंग्रेज़ी साहित्य में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। आपने स्पेनिश भाषा में सर्टिफ़िकेट और डिप्लोमा कोर्स भी पूरा किया।

आपने आई.ए.एस. परीक्षा के पश्चात् सेंट्रल सेक्रेटेरिएट सर्विस में कार्य किया। आप कमिटी ऑव पार्लियामेंट में प्राच्य भाषाओं (हिंदी) में सचिव के पद पर भी कार्यरत रहीं। आपने वैधानिक निकाय के सचिव के रूप में एवं वर्ष 1979 से भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों में कार्य किया। अंग्रेज़ी से हिंदी और हिंदी से अंग्रेज़ी के अनुवाद कार्यों से लगभग 22 वर्षों तक आप जुड़ी रहीं। आपने 29 अगस्त, 2011 से 27 फ़रवरी, 2013 तक विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस में महासचिव का पद संभाला।

आपके कार्य प्रोफ़ाइल में वैविध्य रहा और इनमें सामान्य प्रशासन, वित्तीय प्रबंधन, डाकघरों की स्थापना, विभागीय परीक्षाओं का संचालन, वाणिज्यिक प्रचार और प्रेस सम्मेलन, मुद्रण कार्य, सामाजिक लेखा परीक्षण, खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा संसदीय समिति के लिए रिपोर्ट तैयार करना आदि से संबंधित कार्य सम्मिलित थे।

आपको हिंदी भाषा, साहित्य और भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार का व्यापक ज्ञान और अनुभव था। आप भारत के इतिहास एवं सामाजिक व धार्मिक वास्तविकताओं से भलि-भाँति परिचित थीं।

सोशल ऑडिट पैनल (दूरसंचार विभाग) और आधिकारिक भाषाओं के काम के सिलसिले में आपने पूरे भारत में यात्राएँ कीं। आपने विदेश यात्राएँ भी की हैं, जैसे यू.के., फ़्रांस, स्पेन, इटली, स्विट्ज़रलैंड, जर्मनी, नीदरलैंड, ग्रीस, मलेशिया, सिंगापुर, थाईलैंड आदि।

संपादन, रचनात्मक लेखन और हिंदी प्रचार गतिविधियों में आप सक्रिय रहीं। आपके कई लेख समाचार-पत्रों में प्रकाशित हो चुके हैं। विश्व हिंदी सचिवालय में अपने कार्यकाल के अंतर्गत आपने कई महत्त्वपूर्ण योजनाओं की संकल्पना कीं और उनको साकार करने में अपनी दूरदर्शिता का प्रयोग किया।

विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यों को आगे बढ़ाने में आपने अहम भूमिका निभाई। आपके नेतृत्व में कई सम्मेलन, कवि-गोष्ठियाँ, सम्मान-समारोह, आई.सी.टी. कार्यशालाएँ आदि सम्पन्न हुईं। विश्व हिंदी सचिवालय तथा हिंदी जगत् के लिए आपका जाना अपूरणीय क्षति है।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

डॉ. नरेन्द्र कोहली - विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद् के सदस्य

17 अप्रैल, 2021 को प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार डॉ. नरेन्द्र कोहली का 81 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 6 जनवरी, 1940 को सियालकोट (अब पाकिस्तान) में हुआ था। आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से 1963 में एम.ए. और 1970 में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। पी.जी. डी.ए.वी. कॉलिज तथा 1965 से मोतीलाल नेहरू कॉलिज में आप कार्यरत रहे। 1995 में आप सेवानिवृत्त हुए। आपको 'आधुनिक तुलसीदास' के नाम से भी जाना जाता था।

आप विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद् के सदस्य भी रहे।

आपको 'पद्मश्री', 'शलाका सम्मान', 'साहित्य भूषण', 'उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार', 'साहित्य सम्मान' आदि कई अन्य पुरस्कारों से नवाज़ा जा चुका है।

आपने शताधिक श्रेष्ठ ग्रंथों का सृजन किया है। 'पुनरारंभ', 1972 में 'आतंक', 1973 में 'आश्रितों का विद्रोह', 1974 में 'साथ सहा गया दुख मेरा', 1975 में 'अपना संसार' आदि जैसे उपन्यास सहित साहित्य की विभिन्न विधाओं यथा व्यंग्य, नाटक, कहानी, संस्मरण, निबंध, पत्र आदि और आलोचनात्मक साहित्य में भी आपने अपनी लेखनी चलाई है तथा लगभग सौ से अधिक पुस्तकें लिखीं। हिंदी साहित्य में 'महाकाव्यात्मक उपन्यास' की विधा को प्रारंभ करने का श्रेय आपको ही जाता है। आपने महाभारत की कथा को अपने उपन्यास 'महासमर' के आठ खंडों में समाहित किया। आपने पहली बार रामकथा को उपन्यास श्रृंखला के रूप में लिखा।

विश्व हिंदी सचिवालय तथा जीवनी.ऑर्ग से साभार

डॉ. बाल सुब्रमण्यम

2 अप्रैल, 2021 को नागरी लिपि परिषद् के वरिष्ठ उपाध्यक्ष और सुप्रसिद्ध हिंदी सेवी एवं अनुवादविद् डॉ. एच. बाल सुब्रमण्यम का कोरोना बीमारी के कारण निधन हो गया। कलाडी, केरल में जन्मे डॉ. बाल सुब्रमण्यम मलयालम, तमिल और हिंदी भाषा में प्रवीण थे। आपने भारत सरकार के केंद्रीय हिंदी निदेशालय में अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। सेवानिवृत्ति के बाद आप कई हिंदी सेवी संस्थाओं से जुड़े रहे। आप जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में विज़िटिंग प्रोफ़ेसर भी रहे। आपने अनेक तमिल और मलयालम ग्रंथों का अनुवाद हिंदी भाषा में किया। आप जीवन पर्यन्त नागरी लिपि और हिंदी भाषा के लिए समर्पित रहे।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

डॉ. क्षमा शंकर पांडेय

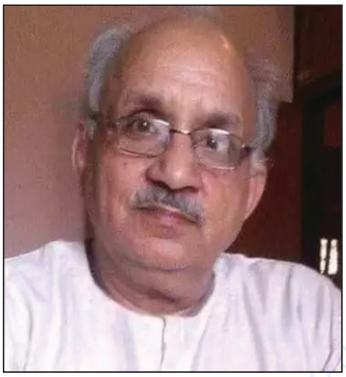

12 मई, 2021 को कवि एवं आलोचक डॉ. क्षमा शंकर पांडेय का 66 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 28 मार्च, 1955 को नियामत कला गाँव में हुआ था। आपने अपनी शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त की। आप इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में रिसर्च एसोसिएट तथा मिर्ज़ापुर में स्थित राजकीय महाविद्यालय में हिंदी अध्यापन और शोध निर्देशन करते हुए 2015 में एसोसिएट प्रोफ़ेसर के पद से सेवानिवृत्त हुए।

आपको हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा 'साहित्य महोपाध्याय' की उपाधि तथा हिंदी संस्थान द्वारा आलोचना के लिए 'रामचंद्र शुक्ल पुरस्कार' आदि सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। आपकी प्रमुख रचनाओं में 'मुक्तिबोध की काव्य भाषा', 'शताब्दी बदल रही है', 'उग्र विमर्श', 'तुलसीदास : एक अध्ययन', 'नए सवाल मिले', 'पांय न पांख', 'भारतीय नारीवाद : स्थिति और संभावना', 'धूमिल', 'रामकथा विविध संदर्भ', 'हर गवाही आपकी', 'संदर्भ 1857', 'महिला सशक्तिकरण : उपलब्धियाँ और भविष्य', 'हमीरपुर और महोबा जनपदों का फाग', 'हिंदी का बाज़ार : बाज़ार की हिंदी', '1857 स्मृति और यथार्थ तथा कारागार', 'गांधी का देश', 'हँसी खो गई है' एवं 'समय संवादी उग्र' (यंत्रस्थ) आदि शामिल हैं।

साभार : रिपोर्टर वॉइस.इन

डॉ. कुँवर बेचैन

29 अप्रैल, 2021 को विख्यात कवि और गीतकार डॉ. कुँवर बेचैन का 78 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 11 जुलाई, 1942 को उत्तर प्रदेश के ज़िला मुरादाबाद के उमरी गाँव में हुआ था। आपका वास्तविक नाम डॉ. कुँवर बहादुर सक्सेना है। आप हिंदी की वाचिक परम्परा के प्रख्यात कवि माने जाते रहे हैं। आपने एम.कॉम के साथ एम.ए (हिंदी) व पी.एच.डी. की पढ़ाई की है। आप गाज़ियाबाद के एम.एम.एच. महाविद्यालय में हिंदी विभागाध्यक्ष के रूप में अध्यापन कार्य कर चुके हैं तथा वहाँ रीडर भी रह चुके हैं।

आपको 1977 में 'साहित्य सम्मान', 2004 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'साहित्य भूषण', 2004 में 'परिवार पुरस्कार सम्मान', राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी ज़ैल सिंह एवं महामहिम डॉ. शंकरदयाल शर्मा द्वारा सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

हिंदी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षरों में प्रसिद्ध आपने अनेक विधाओं में साहित्य-सृजन किया है। आपके गीत-संग्रह, ग़ज़ल-संग्रह, काव्य-संग्रह, महाकाव्य तथा उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। 'पिन बहुत सारे', 'भीतर साँकल : बाहर साँकल', 'उर्वशी हो तुम, झुलसो मत मोरपंख', 'एक दीप चौमुखी, नदी पसीने की', 'दिन दिवंगत हुए', 'ग़ज़ल-संग्रह : शामियाने काँच के', 'महावर इंतज़ारों का', 'रस्सियाँ पानी की', 'पत्थर की बाँसुरी', 'दीवारों पर दस्तक', 'नाव बनता हुआ काग़ज़', 'आग पर कंदील', जैसे उनके कई और गीत संग्रह हैं, 'नदी तुम रुक क्यों गई', 'शब्द : एक लालटेन', पाँचाली (महाकाव्य) जैसे कविता-संग्रह, 'लौट आ रे', 'प्यासे होंठों से', 'जिस मृग पर कस्तूरी है', 'सोख न लेना पानी' आदि आपकी प्रतिनिधि रचनाएँ हैं।

साभार : आज तक.इन तथा कविता कोश.ऑर्ग

श्री मंजूर एहतेशाम

26 अप्रैल, 2021 को प्रसिद्ध लेखक श्री मंजूर एहतेशाम का 73 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 3 अप्रैल, 1948 को भोपाल में हुआ था। आपने इंजीनियरिंग (विद्युतीय) की पढ़ाई की तथा फ़र्नीचर निर्माता तथा इंटीरियर डेकोर रह चुके हैं। आपको 2003 में 'पद्मश्री सम्मान', भारतीय भाषा परिषद् द्वारा पुरस्कार, 'श्रीकांत वर्मा स्मृति सम्मान', 'वागेश्वरी आवर्ड', कोलकाता का 'नाथमल भुवालिक सम्मान', मध्य प्रदेश का 'शिखर सम्मान', 'सुब्रह्मण्यम भारती पुरस्कार' एवं 'पहल सम्मान' आदि से विभूषित किया जा चुका है।

1973 में आपकी पहली कहानी 'रमज़ान की मौत' प्रकाशित हुई थी। 'कुछ दिन और', 'सूखा बरगद', 'दास्तान-ए-लापता', 'बशारत मंज़िल', 'पहर ढलते' आपके प्रमुख उपन्यास हैं। नाटक 'एक था बादशाह', 'तसबीह','तमाशा' आदि कहानियाँ भी आपकी रचनाओं में शामिल हैं। आपकी पुस्तक 'दास्तान-ए-लापता' का अमेरिका के एक प्रोफ़ेसर ने अंग्रेज़ी में अनुवाद किया था।

साभार : विश्व हिंदी डेटाबेस तथा नई दुनिया.कॉम

डॉ. नरेंद्र मोहन

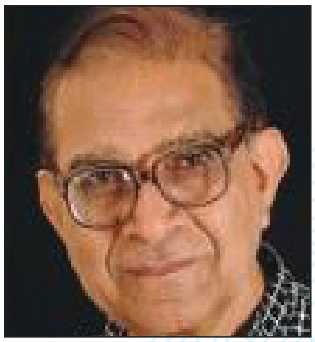

11 मई, 2021 को प्रख्यात हिंदी कवि, नाटककार और आलोचक डॉ. नरेंद्र मोहन का 85 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 30 जुलाई, 1935 को लाहौर में हुआ था। आपने पिछले चार दशकों से साहित्यिक परिदृश्य में एक राष्ट्रीय व्यक्तित्व के रूप में अपनी पहचान स्थापित की है। आपने 1956 में पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से हिंदी में बी.ए. और 1958 में एम.ए. तथा 1966 में पंजाब विश्वविद्यालय से आधुनिक हिंदी कविता में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। 1958 में आप खालसा कॉलिज, लुधियाना में हिंदी के व्याख्याता रहे। 1967 में खालसा कॉलिज, दिल्ली में और 1988 से 2000 तक आप हिंदी विश्वविद्यालय में रीडर के रूप में नियुक्त थे। पंजाब और कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा के विभिन्न कॉलिजों में 6 साल पढ़ाने के बाद आप दिल्ली विश्वविद्यालय, खालसा कॉलिज में स्थानांतरित हो गए और बाद में हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय में रीडर के रूप में कार्य करने लगे। आप वर्ष 2000 में सेवानिवृत्त हुए।

आपकी पूरी रचनाएँ बारह खंडों में प्रकाशित हैं। बारह खंडों में नरेंद्र मोहन की 'रचा-घाटी' हिंदी साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान है। आपने टी.वी. सीरियल 'उजाले की ओर' का लेखन और निर्देशन किया, जिसमें आपको प्रसिद्धि मिली। आप हिंदी कविता में दो आंदोलनों के एक साहित्यिक ट्रेंड-सेटर हैं, जिन्हें 'विचार कविता' और 'लम्बी कविता' कहा जाता है। आपने 1969 से 1973 तक साहित्यिक पत्रिका 'संचेतना' का संपादन किया।

1995 में पंजाब सरकार द्वारा 'शिरोमणी साहित्यकार सम्मान', हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा नाटक 'कहे कबीर सुनो भाई साधो' के लिए पुरस्कार, भाषा विभाग द्वारा आपकी कविताओं के संग्रह 'इस हादसे में' पर प्रथम पुरस्कार, ऑल इंडिया आवर्ड मिनिस्ट्री ऑव एजुकेशन, भारत सरकार द्वारा 'समकालीन कहानी की पहल' पुस्तक पर पुरस्कार, हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा आपकी आलोचनात्मक पुस्तक 'कविता की विचित्र भूमिका' पर पुरस्कार, भाषा विभाग, पंजाब द्वारा आलोचनात्मक पुस्तक 'आधुनिकता और समकालीन रचना संदर्भ' पर पुरस्कार, हिंदी संस्थान, उत्तर प्रदेश, भारत सरकार द्वारा आलोचनात्मक पुस्तक 'आधुनिकता के संदर्भ में हिंदी कहानी' पर प्रथम पुरस्कार, भाषा विभाग, पंजाब द्वारा कविता-संग्रह 'समान होने पर' पर पहला पुरस्कार, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'साहित्य भूषण सम्मान' तथा हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा 'साहित्य सम्मान' से अलंकृत किया जा चुका है।

1988 में 'कहे कबीर सुनो भाई साधो' और 'सींगधारी', 1991 में 'कलंदर', 1994 में 'नो मैन्स लैंड', 2000 में 'अभंग-गाथा', 2005 में 'मिस्टर जिन्ना', 2010 में 'हद हो गई, यारों', 2012 में 'मलिक अंबर' तथा 'मंच अंधेरे में' आदि जैसे नाटक, 1975 में 'इस हादसे में', 1979 में 'सामना होने पर', 1983 में 'एक अग्निकांड जगहें बदलता', 1990 में 'हथेली पर अंगारे की तरह', 1993 में 'संकट दृश्य का नहीं', 1997 में 'एक सुलगती खामोशी', 2006 में 'एक खिड़की खुली है अभी', 2008 में 'नीले घोड़े का सवार', 2011 में 'रंग आकाश में शब' आदि जैसे कविता-संग्रह आपकी रचनाओं में शामिल हैं।

आपने 1970 में हिंदी कहानी : 'दो दशक की यात्रा', 1975 में 'आधुनिक हिंदी उपनिषद्', 1976 में 'लम्बी कविता का रचना विधान', 1978 में 'कहीं भी खतम कविता नहीं होती', 1980 में 'विचार और लहु के बीच', 1980 में 'प्रेमचंद का कथा संसार', 1974 में 'विद्रोह और साहित्य', 1982 में 'संघर्ष, परिवार और साहित्य', 1975 में 'सिक्का बदल गया', 1984 में 'भारत विभाजन : उर्दू की श्रेष्ठ कहानी', 1984 में 'भारत विभाजन : हिंदी की श्रेष्ठ कहानी', 1984 में 'खोई हुई खुशबू : विभाजन की श्रेष्ठ कहानियाँ', 1991 में 'सआदत हसन मंटो के नाटक', 1992 में 'सआदत हसन मंटो की कहानी', 1994 में 'समकालीन हिंदी कहानियाँ', 1996 में 'बीसवीं शताब्दी : लंबी कविताएँ', 1995 में 'एक नारी है रचना' आदि पुस्तकों का संपादन भी किया।

आपकी कविताओं, नाटकों और आलोचनात्मक लेखों का पंजाबी, उर्दू, मराठी, अंग्रेज़ी, तेलुगू, कन्नड़ और अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है।

1972 में 'आधुनीक हिंदी कविता में अप्रस्तुत-विधान', 1973 में 'आधुनिकता और समकालीन रचना संदर्भ', 1978 में 'कविता की वैचारिक भूमिका', 1978 में 'समकालीन कहानी की पहचान', 1982 में 'आधुनिकता के संदर्भ में हिंदी कहानी', 1989 में 'पंजाब के लोक गाथा गीत', 1991 में 'शास्त्रीय आलोचना से विदाई', 1994 में 'समकालीन कविता के बारे में', 1996 में 'बीसवीं शताब्दी का उत्तरार्ध : हिंदी कहानी', 2006 में 'रचना का सच', 2008 में 'विभाजन की त्रासदी : भारतीय कथा दृष्टि' जैसी साहित्यिक आलोचनात्मक पुस्तकें आपकी रचनाओं में शामिल हैं।

साभार : ओपन लाइब्रेरी.ऑर्ग

पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी

22 मई, 2021 को विख्यात संस्कृत विद्वान और कवि पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी का 85 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म मध्यप्रदेश के सीहोर ज़िले के नांदेड़ गाँव में हुआ था। आप साहित्य शास्त्र के मूर्धन्य विद्वान रहे। आप बी.एच.यू. के संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय के प्रमुख, साहित्य विभाग में विभागाध्यक्ष, काशी विद्वत्परिषद् के संगठन मंत्री भी रह चुके हैं।

आप कई महत्त्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवाएँ दे चुके हैं। आप कालिदास संस्थान, वाराणसी के संस्थापक भी रहे। आपको 1979 में 'राष्ट्रपति पुरस्कार', 1991 में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', 1993 में भारतीय

भाषा परिषद्, कलकत्ता द्वारा 'कल्पावल्ली पुरस्कार', 1997 में के.के. बिड़ला फ़ाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा 'वाचस्पति पुरस्कार', 1999 में आर.जे. डालमिया श्रीवेणी ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा 'श्रीवेणी पुरस्कार', उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान की ओर से 'विश्व भारती सम्मान' से अलंकृत किया जा चुका है। दो संस्कृत महाकाव्य कविताएँ 'सीताचरितम' और 103 सर्ग का 'स्वातंत्र्यसंभवम्', साहित्य शास्त्र के छह मौलिक ग्रंथ आपकी प्रमुख कृतियों में सम्मिलित हैं। आपने कई शोध-पत्रों तथा शताधिक ग्रंथों का संपादन भी किया।

साभार : लाइव हिंदुस्तान.कॉम

श्री प्रभु जोशी

4 मई, 2021 को इंदौर के प्रसिद्ध साहित्यकार, चित्रकार और पत्रकार श्री प्रभु जोशी का 70 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 12 दिसंबर, 1950 को हुआ था। आपके व्यक्तित्व में एक चित्रकार, कहानीकार, संपादक, आकाशवाणी अधिकारी और टेलीफ़िल्म निर्माता समाहित है। ट्वेंटी फ़र्स्ट सैंचुरी गैलरी, न्यू यॉर्क के टॉप सेवैंटी में आप शामिल रहे। प्रभु जोशी को गैलरी फ़ॉर केलिफ़ोर्निया (यू.एस.ए.) का जलरंग हेतु थॉमस मोरान आवर्ड मिला। बर्लिन में संपन्न जनसंचार के अंतरराष्ट्रीय स्पर्धा में आपके 'आफ़्टर ऑल हाउ लॉन्ग' रेडियो कार्यक्रम को जूरी का विशेष पुरस्कार दिया गया था। इसके अतिरिक्त आपको 'इम्पैक्ट ऑफ़ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ऑन ट्रायबल सोसायटी' विषय पर किए गए अध्ययन हेतु 'ऑडियंस रिसर्च विंग' का 'राष्ट्रीय पुरस्कार' दिया गया था। आपको भारत भवन का चित्रकला तथा मध्य प्रदेश साहित्य परिषद् का कथा-कहानी के लिए 'अखिल भारतीय सम्मान' भी प्राप्त हुआ। साहित्य के लिए मध्य प्रदेश संस्कृति विभाग द्वारा आपको गजानन माधव मुक्तिबोध फ़ेलोशिप दिया गया था। 'उत्तम पुरुष' नाम से कहानियाँ आपकी रचनाओं में शामिल हैं। इसके साथ ही आपकी हिंदी और अंग्रेज़ी कहानियों का प्रकाशन विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में हुआ।

साभार : नईदुनिया.कॉम

प्रो. शेर सिंह बिष्ट

19 अप्रैल, 2021 को साहित्यकार प्रो. शेर सिंह बिष्ट का 68 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 10 मार्च, 1953 को अल्मोड़ा जनपद के भनोली गाँव में हुआ था। आपने अपनी प्राथमिक शिक्षा प्राथमिक विद्यालय भनोली से और माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक शिक्षा ज्ञानोदय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भनोली से प्राप्त की। इसके पश्चात् आपने राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अल्मोड़ा से बी.ए. और नैनीताल के डी.एस.बी. परिसर से एम.ए. तथा 1980 में कुमाऊँ विश्वविद्यालय से डी.लिट की उपाधि प्राप्त की। 1976 में नैनीताल के डी.एस.बी. कॉलिज के हिंदी विभाग में आप हिंदी के असिस्टेंट प्रोफ़ेसर पद पर नियुक्त हुए। इसके बाद आपने 1982 तक अध्यापन-कार्य किया तथा महाविद्यालय व परिसर में सहायक प्राध्यापक, उपाचार्य, आचार्य, कुलानुशासक, हिंदी विभागाध्यक्ष आदि पदों पर अपनी सेवाएँ देते हुए 2018 में सेवानिवृत्त हुए। आपने हिंदी तथा कुमाउनी भाषा के लिए जीवन भर कार्य किया।

आपको शिक्षा और साहित्य के उल्लेखनीय कार्य हेतु 1976 में 'स्वर्ण पदक', 1993 में 'आचार्य नरेंद्रदेव अलंकार सम्मान', 2001 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'सुमित्रानंदन पंत नामित पुरस्कार', 'यू.जी.सी कैरियर आवर्ड', 2003 में 'उत्तरांचल रत्न आवर्ड', 2006 में 'भारत ज्योति आवर्ड', उत्तराखंड भाषा संस्थान द्वारा 'डॉ. गोविंद चातक सम्मान' आदि सम्मानों से अलंकृत किया जा चुका है।

1993 में 'कविता अधूरी है', 1990 में 'सुमित्रानंदन पंत के साहित्य का ध्वनिवादी अध्ययन', 1992 में 'ध्वनि सिद्धांत' जैसे शोध ग्रंथ, 1998 में 'भारत माता', 2000 में 'इजा' जैसे कविता-संग्रह, 2014 में 'भारतक भविष्य', 2013 में 'मुन्खि' जैसे कुमाउनी निबंध-संग्रह, 1994 में 'हिंदी-कुमाउनी-अंग्रेज़ी शब्दकोश' तथा 2012 में 'कुमाउनी-हिंदी कहावत कोश' तथा 1981 में 'कथा विविधता', 2005 में 'मानक हिंदी शब्दावली' जैसी संपादित पुस्तकें आदि आपकी रचनाओं में शामिल हैं।

साभार : डॉ. पवनेश.कॉम

रंजना श्रीवास्तव

मई 2021 में साहित्य जगत् में राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान बनानेवाली सिलीगुड़ी की साहित्यकार व कवयित्री रंजना श्रीवास्तव का 61 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 9 सितंबर, 1959 को उत्तर प्रदेश के गाज़ीपुर शहर में हुआ था। आपने गोरखपुर विश्वविद्यालय से एम.ए. व बी.एड. की शिक्षा प्राप्त की। आपने कुछ वर्षों तक अध्यापन-कार्य किया तथा स्त्री-विमर्श की सशक्त आवाज़ रहीं। आपको 'सिलीगुड़ी गौरव सम्मान', उत्तर बंग नाट्य जगत् द्वारा 'विशिष्ट कविता लेखन सम्मान', युवा जागृति संघ द्वारा 'साहित्य रत्न सम्मान', हल्का-ए-तामीर-ए अदब इस्लामाबाद द्वारा प्रशस्ति-पत्र आदि सम्मानों से अलंकृत किया जा चुका है।

आपके लेख साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से छपते रहते थे। आपने 'सृजन पथ' पत्रिका का संपादन किया। 'चाहत धूप के एक टुकड़े की', 'तनिक ठहरो समुद्र', 'जीवन जीवन के बीच', 'इन दिनों रोशनी भीतर में बजती है' आदि जैसे कविता-संग्रह, 'आईना-ए-रूह', 'एक लड़की मोहब्बत में जलती रही' व 'कबीर की अलमस्त फ़कीरी में' जैसे गज़ल-संग्रह, 'फ़ैसले अब हमारे हैं' जैसे निबंध-संग्रह, 'लम्हों के दस्तख्वान', 'डार्क ज़ोन' जैसे कहानी-संग्रह, 'नायरा खान' जैसे उपन्यास आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

साभार : हिंदी समय.कॉम तथा फ़ेसबुक

श्री सत्य प्रकाश असीम

3 मई, 2021 को वरिष्ठ पत्रकार, कवि और लेखक सत्य प्रकाश असीम का निधन हो गया। आपका जन्म वर्ष 1956 में उत्तर प्रदेश के गाज़ीपुर ज़िला के मोहम्मदाबाद में हुआ था। आपकी रुचि लेखन-कार्य में काशी विद्यापीठ, वाराणसी से राजनीति शास्त्र में स्नातकोत्तर करने से पहले ही रही थी। आपने पत्रकारिता की शुरुआत वाराणसी के राष्ट्रीय हिंदी दैनिक 'आज' से की। आप 'आज' के स्थानीय सम्पादक, फिर नई दिल्ली स्थित 'आज' में राजनीतिक सम्पादक भी रहे। हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए आपको वर्ष 1987 में 'राजभाषा पुरस्कार' मिला। आपने राष्ट्रीय महत्त्व के विभिन्न विषयों पर दूरदर्शन के लिए कई वृत्तचित्रों एवं धारावाहिकों का लेखन-निर्माण एवं निर्देशन किया। 2016 में कविता-संग्रह 'सुन समंदर' और 2017 में उपन्यास 'योगिनी मंदिर' आपकी उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

साभार : अनावरण न्यूज़.कॉम

श्री अरविंद कुमार

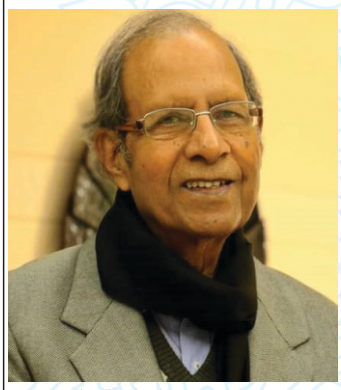

27 अप्रैल, 2021 को प्रसिद्ध कोशकार श्री अरविंद कुमार का 91 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 17 जनवरी, 1930 को मेरठ शहर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। आपने अंग्रेज़ी साहित्य में एम.ए. की पढ़ाई की। आपने हिंदी कोशकारिता को अपना पूरा जीवन समर्पित किया। कोशकारिता से पूर्व आप एक प्रख्यात पत्रकार रहे। आपने 1980 से 1985 तक 'सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट' तथा 1963 से 1978 तक फ़िल्मी पत्रिका 'माधुरी' का संपादन किया। आपके अंग्रेज़ी से हिंदी, हिंदी से अंग्रेज़ी तथा संस्कृत से हिंदी काव्य तथा गद्य अनुवाद प्रसिद्ध हैं। आपके द्वारा कला, साहित्य और

फ़िल्मों की समीक्षाएँ हिंदी तथा अंग्रेज़ी पत्रिकाओं में छपती रही हैं। समांतर कोश, हिंदी थिसारस, अरविंद सहज समांतर कोश, शब्देश्वरी, द पेंगुइन इंग्लिश-हिंदी/हिंदी-इंग्लिश थिसारस एंड डिक्शनरी, भोजपुरी - हिंदी-इंग्लिश लोक भाषा शब्दकोश, बृहत् समांतर कोश, अरविंद वर्ड पावर, इंग्लिश-हिंदी, अरविंद तुकांत कोश आपके कुछ प्रकाशित कोश ग्रंथ हैं। 'सहज गीता', 'विक्रम सैंधव' (नाटक), 'जूलियस सीज़र' (शेक्सपीयर) और 'फ़ाउस्ट एक त्रासदी ' (गाएथे) के काव्यानुवाद आपकी कुछ अन्य प्रकाशित कृतियाँ हैं। आपको 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन में 'विश्व हिंदी सम्मान', साहित्य संस्था परंपरा द्वारा 'परंपरा विशिष्ट ऋतुराज सम्मान', दिल्ली के हिंदी अकादमी द्वारा 'शलाका सम्मान', आगरा के केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा 'सुब्रह्मण्यम भारती आवर्ड', महाराष्ट्र राज्य हिंदी अकादमी द्वारा 'अखिल भारतीय हिंदी सेवा पुरस्कार' तथा हिंदी साहित्य सम्मेलन में 'डॉक्टर हरदेव बाहरी सम्मान' से अलंकृत किया जा चुका है।

साभार : विश्व हिंदी पत्रिका 2015 तथा आज तक.इन

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

संगोष्ठी/वेबिनार/वार्ता/परिसंवाद/साहित्य विमर्श/सम्मेलन/कार्यशाला/परिचर्चा

'हिंदी की प्रयोजनमूलकता : विविध आयाम' विषय पर अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

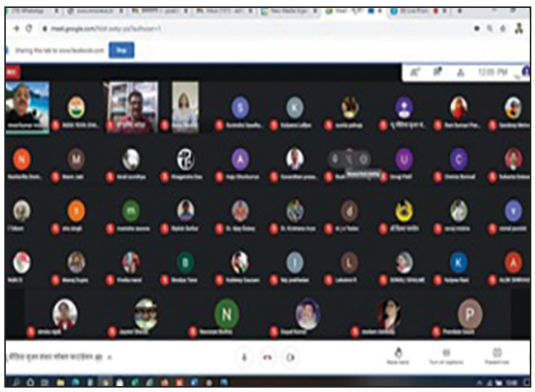

4 अप्रैल, 2021 को विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, इंदौर, न्यू मीडिया सृजन संसार ग्लोबल फ़ाउंडेशन एवं सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका के संयुक्त तत्वावधान में 'हिंदी की प्रयोजनमूलकता : विविध आयाम' विषय पर एक अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. आशा शुक्ल, माननीय कुलपति, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महु, मध्य प्रदेश, भारत ने की। प्रो. विनोद कुमार मिश्र, महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का सान्निध्य रहा। प्रो. हरीश अरोड़ा, प्रोफ़ेसर एवं निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत मुख्य वक्ता रहे तथा डॉ. सुरेन्द्र कुमार उपाध्याय, हिंदी अधिकारी, असम विश्वविद्यालय, सिलचर विशिष्ट वक्ता रहे। वेबिनार के निवेदक प्रो. आशा शुक्ल, प्रो. विनोद कुमार मिश्र, डॉ. शैलेश शुक्ल, प्रधान संपादक, सृजन ऑस्ट्रेलिया तथा श्रीमती पूनम चतुर्वेदी शुक्ल, संस्थापक-निदेशक, न्यू मीडिया सृजन संसार ग्लोबल फ़ाउंडेशन एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई पत्रिका थे।

प्रो. हरीश अरोड़ा ने संगोष्ठी के मुख्य वक्ता के रूप में हिंदी की प्रयोजनमूलकता के विविध आयामों - राजभाषा, मीडिया, अनुवाद, विज्ञापन, पत्रकारिता, साहित्य-सृजन आदि के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ देने के साथ, इन सभी क्षेत्रों में उपलब्ध रोज़गार के अवसरों पर भी बात की। वेब संगोष्ठी के विशिष्ट वक्ता असम विश्वविद्यालय, सिलचर के हिंदी अधिकारी, डॉ. सुरेन्द्र कुमार उपाध्याय ने प्रयोजनमूलक हिंदी के महत्त्वपूर्ण आयाम राजभाषा के कार्यान्वयन पर अपनी बात रखते हुए उच्च शिक्षा संस्थानों में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रक्रिया को दर्शाया।

डॉ. बी.आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. आशा शुक्ल ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए भारत के सभी हिंदी सेवियों, हिंदी सेवी संस्थाओं एवं विश्वविद्यालयों को एकजुट होकर आंदोलन करने की आवश्यकता की बात कही तथा विभिन्न वेब सीरीज़ के माध्यम से हिंदी भाषा और संस्कृत को होनेवाली क्षति के प्रति सजग

होने और ऐसी वेब सीरीज़ का विरोध करने को कहा।

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव, प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने अपने वक्तव्य में प्रयोजनमूलक हिंदी के शिक्षकों की कमी की ओर ध्यान आकर्षित किया।

कार्यक्रम का संचालन सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका के प्रधान संपादक, डॉ. शैलेश शुक्ल ने किया। इस वेब संगोष्ठी में गूगल मीट और फ़ेसबुक लाइव के माध्यम से 500 से अधिक हिंदी प्रेमी शामिल हुए।

संगोष्ठी गूगल मीट प्लेटफ़ॉर्म पर सम्पन्न हुआ तथा सृजन ऑस्ट्रेलिया व विश्व हिंदी सचिवालय के फ़ेसबुक पृष्ठ पर लाइव प्रसारित हुआ। 1000 से अधिक प्रतिभागी कार्यक्रम से लाइव जुड़े थे।

साभार : सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका का फ़ेसबुक पृष्ठ

'हिंदी पत्रकारिता : इक्कीसवीं सदी की चुनौतियाँ और संभावनाएँ' विषय पर अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

30 मई, 2021 को हिंदी पत्रकारिता दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना संस्था द्वारा 'हिंदी पत्रकारिता : इक्कीसवीं सदी की चुनौतियाँ और संभावनाएँ' विषय पर अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार, श्री अनिल त्रिवेदी रहे। नॉर्वे, ओस्लो से साहित्यकार श्री सुरेशचंद्र शुक्ल 'शरद आलोक', उज्जैन से श्रीमती हीना तिवारी, नई दिल्ली से पत्रकार, डॉ. राकेश छोकर, पुणे से राष्ट्रीय मुख्य संयोजक प्राचार्य, डॉ. शहाबुद्दीन नियाज मोहम्मद शेख एवं राष्ट्रीय महासचिव, डॉ. प्रभु चौधरी विशिष्ट अतिथि रहे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता विक्रम विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर शैलेंद्र कुमार शर्मा रहे तथा अध्यक्षता, श्री हरेराम वाजपेयी ने की।

श्री अनिल त्रिवेदी ने अभिव्यक्ति की आज़ादी के बदलाव के कारण पत्रकारिता की पुनर्परिभाषा की आवश्यकता पर बल दिया। प्रो. शैलेंद्र कुमार शर्मा ने कहा कि नई तकनीक हिंदी पत्रकारिता के समक्ष कई चुनौतियाँ पैदा करने के साथ-साथ नई संभावनाएँ भी उद्घाटित कर रही है और भविष्य में प्रामाणिकता और मौलिकता के कारण हिंदी पत्रकारिता मज़बूती के साथ आगे बढ़ेगी। श्री सुरेशचंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' ने कहा कि विदेश में हिंदी पत्रकारिता चुनौतियों के बीच से अपनी राह बना रही है तथा विदेशों में बसे भारतीय हिंदी पत्रकार सोशल मीडिया में अपना योगदान दे रहे हैं। श्रीमती हीना तिवारी ने हिंदी पत्रकारिता को विश्व प्रसिद्ध माना और हिंदी में अनेक वेब पोर्टल के संचालित होने की बात कही। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में, हिंदी परिवार के संस्थापक, श्री हरेराम वाजपेयी ने हिंदी पत्रकारिता को सच्चाई पर टिके रहने की बात कही।

संगोष्ठी का संचालन डॉ. रश्मि चौबे ने किया तथा आभार-प्रदर्शन डॉ. गरिमा गर्ग ने किया।

डॉ. शैलेंद्र शर्मा.ब्लॉग्स्पॉट.कॉम से साभार

'जापान में हिंदी शिक्षण' विषयक वेबिनार

12 अप्रैल, 2021 को विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, वैश्विक हिंदी परिवार, दिल्ली एवं संगम सिंगापुर द्वारा भाषा विमर्श श्रृंखला – विश्व हिंदी शिक्षण विमर्श-10 - 'जापान में हिंदी शिक्षण' विषय पर वेबिनार का आयोजन हुआ। वक्ता पद्मश्री तोमियो मिज़ोकामी, प्रोफ़ेसर एमेरिटस ओसाका विश्वविद्यालय, जापान तथा प्रो. सुरेश ऋतुपर्ण, पूर्व प्रोफ़ेसर तोक्यो यूनीवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़, जापान ने टोक्यो के हिंदी परिदृश्य पर प्रकाश डाला।

भारतीय दूतावास, टोक्यो की ओर से विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक प्रो. सिद्धार्थ सिंह ने दूतावास तथा दूतावास में स्थित विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयासों की चर्चा की। समापन भाषण प्रसिद्ध पत्रकार श्री राहुल देव ने दिया तथा वातायन यू.के. से सम्बद्ध डॉ. पद्मेश गुप्त ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

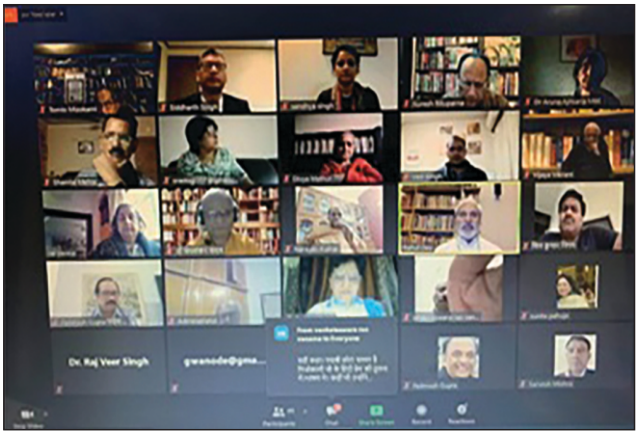

संचालन संगम सिंगापुर संस्था की डॉ. संध्या सिंह ने किया। मुख्य वक्तव्यों के बाद एक परिचर्चा आयोजित हुई, जिसमें विश्व के समस्त स्थानों से सुश्री दिव्या माथुर, श्री नारायण कुमार, श्री विजय मल्होत्रा, श्री राजेश कुमार, डॉ. जवाहर कर्नावट , प्रो. विनोद कुमार मिश्र इत्यादि अनेक हिंदी विद्वानों ने सक्रिय भागीदारी की। संगोष्ठी ज़ूम प्लेटफ़ॉर्म पर सम्पन्न हुई तथा वैश्विक हिंदी परिवार के फ़ेसबुक पृष्ठ तथा यूट्यूब पर लाइव दिखाई गयी। 100 से अधिक प्रतिभागी कार्यक्रम से लाइव जुड़े थे।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार का फ़ेसबुक पृष्ठ
एवं भारतीय दूतावास, टोक्यो का फ़ेसबुक पृष्ठ

रजनीगंधा - अंतरंग साहित्यिक वार्ता

4 अप्रैल 2021 को विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस तथा श्री अनूप भार्गव, रेखा सेठी, श्रीमती शैलजा सक्सेना तथा शार्दुला नोगजा द्वारा 'रजनीगंधा' - मन्नू भंडारी जी के 90वें जन्मदिन के अवसर पर आधारित अंतरंग साहित्यिक वार्ता का आयोजन किया गया। रचना यादव, प्रियदर्शन, डॉ. निर्मला जैन, डॉ. रेखा सेठी और डॉ. शैलजा सक्सेना वक्ता रहे। प्रस्तुति नीरजा आप्टे, ऋचा जैन और मानोशी चैटर्जी की रही। कार्यक्रम परिकल्पना अनूप भार्गव एवं शार्दुला नोगजा की रही।

कार्यक्रम का आरंभ करते हुए श्री अनूप भार्गव ने मन्नू भंडारी का संक्षिप्त परिचय दिया और कहा कि छठे-सातवें दशक में भारतवर्ष में 'धर्मयुग' जैसी हिंदी की प्रसिद्ध पत्रिकाओं में उनकी रचनाएँ प्रकाशित होती थीं।

प्रसिद्ध कथाकार प्रियदर्शन ने मन्नू भंडारी की प्रसिद्ध रचनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि वे अपने समय की लेखिकाओं में सर्वाधिक प्रसिद्ध रहीं।

इस कार्यक्रम में मन्नू भंडारी की बिटिया रचना के साथ थीं उनकी अंतरंग सखी डॉ. निर्मला जैन, कथाकार प्रत्यक्षा, साहित्यकार प्रियदर्शन, रेखा सेठी और डॉक्टर शैलजा सक्सेना। मन्नू भंडारी की बेटी रचना यादव ने मन्नू जी की स्मृतियाँ सबसे साझा कीं। इसके उपरान्त श्रीमती शैलजा सक्सेना ने मन्नू भंडारी की रचनाओं के संबंध में अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि मन्नू भंडारी ने नायिकाओं को एक अलग रूप में चित्रित किया है तथा उनकी रचनाएँ जन-जन तक पहुँच चुकी हैं और वर्षों के पश्चात् आज भी उनके कथानक प्रासंगिक प्रतीत होते हैं।

अनामिका जी ने मन्नू जी के संबंध में कहा कि उनके चरित्रों में एक प्रकार की अत्यंत व्यवस्थित ढंग की समाज की पारंपरिक मान्यताओं के प्रति 'सविनय अवज्ञा' है और उनके नारी चरित्रों से मानसिक दृढ़ता के साथ-साथ धैर्य, कोमलता, सौम्यता इत्यादि गुणों को ग्रहण किया जा सकता है।

कार्यक्रम के दौरान मन्नू भंडारी की रचनाओं का पाठ और मन्नू भंडारी के उपन्यासों पर आधारित चलचित्रों की चर्चा भी हुई। भारत के केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष श्री अनिल जोशी ने इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी विद्वानों को साधुवाद दिया। कार्यक्रम का संचालन सिंगापुर से शार्दूला ने किया और विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव, प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने पूरे कार्यक्रम की विवेचना करते हुए धन्यवाद-ज्ञापन किया।

संगोष्ठी ज़ूम प्लेटफ़ॉर्म पर सम्पन्न हुई तथा हिंदी राइटर्स गिल्ड एवं विश्व हिंदी सचिवालय के फ़ेसबुक पृष्ठ पर इसका सीधा प्रसारण हुआ। 1000 से अधिक प्रतिभागी कार्यक्रम से लाइव जुड़े थे।

हिंदी राइटर्स गिल्ड के फ़ेसबुक पृष्ठ से साभार

राष्ट्रवादी लेखक सम्मेलन एवं कार्यशाला

10, 11 और 12 अप्रैल, 2021 को कानपुर में नारायणा विद्यापीठ, गंगागंज पनकी में राष्ट्रवादी लेखक संघ द्वारा तीन दिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत राष्ट्रवादी लेखक सम्मेलन एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत राष्ट्रवादी लेखकों व शोध अध्येताओं का एक सम्मेलन व फ़िल्म निर्माण कार्यशाला सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर राष्ट्रीय विमर्श में लेखक व सोशल मीडिया - सुनियोजित प्रयास, पाठ्य सामग्री, पाठ्य विधियाँ एवं मानवीय अवधारणाएँ : भारतीय परिप्रेक्ष्य, स्वदेशी व आत्मनिर्भर भारत के संदर्भ में लेखकीय दायित्व, भारतीय इतिहास की कालगणना की समस्याएँ व समाधान, जोगेन्द्र नाथ मंडल की वैचारिकता, परिणाम और जाति-व्यवस्था, भारतीय संस्कृति को क्षति पहुँचाता जनसंख्या-परिवर्तन, प्राचीन भारत का गौरवपूर्ण खगोलीय ज्ञान, सम्पर्क भाषा के रूप में हिंदी : दशा-दिशा, साहित्य और इतिहास बोध, आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारत की प्राचीनतम विज्ञान परंपरा तथा आर्य आक्रमण का मिथक और सरस्वती नदी सभ्यता आदि महत्त्वपूर्ण विषयों पर आमंत्रित विद्वानों के द्वारा गंभीर चर्चा की गई। इस कार्यक्रम में देश व उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों के प्रतिनिधि के रूप में लगभग 100 लेखकों, अध्येताओं व शोधार्थियों ने भाग लिया।

साभार : डॉ. आशीष कंधवे का फ़ेसबुक पृष्ठ

भारत, जर्मनी और उज़्बेकिस्तान द्वारा दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय परिसंवाद

3-4 अप्रैल, 2021 को भारत, जर्मनी और उज़्बेकिस्तान द्वारा फ़णीश्वरनाथ रेणु जन्म-शताब्दी अंतरराष्ट्रीय परिसंवाद 2021 का आयोजन किया गया।

प्रथम दिवस को स्वागत-भाषण डॉ. राम प्रसाद भट्ट (जर्मनी) ने दिया। संकल्पना वक्तव्य प्रो. देवेंद्र चौबे ने दिया। इस अवसर पर वक्ता के रूप में श्री के.एस. राव (भारत), श्री प्रेम कुमार मणि (भारत), श्री भरत यायावर (भारत), श्री बदरीनारायण (भारत), श्रीमती इंदिरा गाज़िएवा (रूस), श्री गुलशन सुखलाल (मॉरीशस), श्री शिव कुमार सिंह (पुर्तगाल), डॉ. आना चेल्नोकोवा (रूस), श्री दीपक कुमार राय (भारत) तथा पल्लवी प्रसाद (भारत) उपस्थित रहे।

द्वितीय दिवस के वक्ता प्रो. विनोद कुमार मिश्र, महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय (मॉरीशस), श्री मणींद्र नाथ ठाकुर (भारत), श्री हितेंद्र पटेल (भारत), श्री उपुल रंजीत (श्रीलंका), श्री आनंद वर्धन शर्मा (बुल्गारिया), एकातेरिना कोस्तिना (रूस), रश्मि चौधरी (भारत), डॉ. देविना अक्षयवर (मॉरीशस) तथा फ़ू रोंग (चीन) रहे। संगोष्ठी ज़ूम प्लेटफ़ॉर्म पर सम्पन्न हुई तथा 1000 से अधिक प्रतिभागी कार्यक्रम से लाइव जुड़े थे।

साभार : फ़ेसबुक

'भाषा विमर्श श्रृंखला - कैट टूल्स और हिंदी अनुवाद'

4 अप्रैल, 2021 को केंद्रीय हिंदी संस्थान और विश्व हिंदी सचिवालय के तत्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार की ओर से वेब संगोष्ठी 'भाषा विमर्श श्रृंखला - कैट टूल्स और हिंदी अनुवाद' का आयोजन किया गया। वक्ता श्री बुद्ध चंद्रशेखर, मुख्य समन्वय अधिकारी, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् रहे। विषय-प्रवर्तन श्री राजेश कुमार, साहित्यकार और भाषाविद् ने किया। श्री अनिल

जोशी, उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, भारत सरकार तथा श्री राहुल देव, वरिष्ठ पत्रकार एवं भाषाविद् का सान्निध्य रहा। कार्यक्रम का संचालन श्री अनूप भार्गव ने किया। कार्यक्रम में बड़े पैमाने पर तकनीकी पुस्तकों के अनुवाद के लिए इस्तेमाल किए जा रहे सॉफ़्टवेयर का परिचय कराया गया। संगोष्ठी ज़ूम प्लेटफ़ॉर्म पर सम्पन्न हुई तथा वैश्विक हिंदी परिवार के फ़ेसबुक पृष्ठ तथा यूट्यूब पर लाइव दर्शायी गयी। 100 से अधिक प्रतिभागी कार्यक्रम से लाइव जुड़े थे।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार का फ़ेसबुक पृष्ठ

शक्ति संगम

10 अप्रैल, 2021 को सिंगापुर संगम द्वारा शक्ति संगम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. विनोद कुमार मिश्र, महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय ने की। कार्यक्रम सिंगापुर संगम तथा विश्व हिंदी सचिवालय के फ़ेसबुक पृष्ठ पर सीधा प्रसारित हुआ। 1000 से अधिक प्रतिभागी कार्यक्रम से लाइव जुड़े थे।

साभार : सिंगापुर संगम व विश्व हिंदी सचिवालय का फ़ेसबुक पृष्ठ

हाइकु विधा पर साहित्य-संवाद गोष्ठी

10 अप्रैल, 2021 को भारत की स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव के अवसर पर भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, साहित्य संवाद समिति, विश्व हिंदी सचिवालय एवं सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका के संयुक्त तत्वावधान में 'हाइकु विधा' पर साहित्य संवाद गोष्ठी का आयोजन किया गया। श्री जनेश केन, भारतीय उपउच्चायुक्त, मॉरीशस ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। प्रो. विनोद कुमार मिश्र, महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय तथा श्रीमती सुनीता पाहूजा, द्वितीय सचिव (भाषा एवं संस्कृति), भारतीय उच्चायोग का सान्निध्य रहा। इस अवसर पर प्रो. विनोद कुमार मिश्र, श्रीमती सुनीता पाहूजा, श्री रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' (भारत), डॉ. कुँवर दिनेश सिंह (भारत), डॉ. कविता भट्ट (भारत), श्रीमती भावना सक्सैना (भारत), डॉ. शैलेश गुप्त 'वीर' (भारत), डॉ. शैलेश शुक्ल (भारत), डॉ. पूर्वा शर्मा (भारत), श्रीमती कृष्ण वर्मा (कनाडा), श्रीमती रचना श्रीवास्तव (केलिफ़ोर्निया), डॉ. शैलजा सक्सैना (कनाडा) तथा श्रीमती कल्पना लालजी (मॉरिशस) ने अपनी हाइकु कविताएँ प्रस्तुत कीं। श्री कविराज बाबू (मॉरिशस) ने प्रसिद्ध मॉरीशसीय हाइकुकार श्री इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ की हाइकु कविताएँ प्रस्तुत कीं। श्रीमती अंजू घरभरन ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया तथा डॉ. शैलेश शुक्ल ने तकनीकी सहयोग प्रदान किया। गोष्ठी गूगल मीट प्लेटफ़ॉर्म पर सम्पन्न हुई तथा सृजन ऑस्ट्रेलिया व विश्व हिंदी सचिवालय के फ़ेसबुक पृष्ठ पर सीधा प्रसारित हुई। 2000 से अधिक प्रतिभागी कार्यक्रम से लाइव जुड़े थे।

साभार : सृजन ऑस्ट्रेलिया व विश्व हिंदी सचिवालय का फ़ेसबुक पृष्ठ

'वैश्विक हिंदी की चुनौतियाँ एवं उनके भाषा वैज्ञानिक समाधान' पर अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

17 अप्रैल, 2021 को भारत की स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव के अवसर पर दूर शिक्षा निदेशालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस, भारतीय उच्चायोग, त्रिनिदाद एवं टोबागो, न्यू मीडिया सृजन संसार ग्लोबल फ़ाउंडेशन एवं सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका के संयुक्त तत्वावधान में 'वैश्विक हिंदी की चुनौतियाँ एवं उनके भाषा वैज्ञानिक समाधान' विषय पर वेब संगोष्ठी आयोजित की गई। प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल, कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। मुख्य अतिथि श्री अरुण कुमार साहू, महामहिम भारतीय उच्चायुक्त, त्रिनिदाद एवं टोबागो रहे। प्रो. विनोद कुमार मिश्र, महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का सान्निध्य रहा। मुख्य वक्ता डॉ. वरुण कुमार, निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार रहे तथा कार्यक्रम का संचालन डॉ. शैलेश शुक्ल, प्रधान संपादक, सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका ने किया। निवेदक/संयोजक प्रो. विनोद कुमार मिश्र, डॉ. प्रियंका मिश्र, सह प्राध्यापक, निदेशक दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, श्री शिव

कुमार निगम, द्वितीय सचिव (भाषा, शिक्षा एवं संस्कृति) भारतीय उच्चायोग, त्रिनिदाद एवं टोबागो, डॉ. शैलेश शुक्ल प्रधान तथा श्रीमती पूनम चतुर्वेदी शुक्ल, संस्थापक-निदेशक, न्यू मीडिया सृजन संसार ग्लोबल फ़ाउंडेशन एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका थे। संगोष्ठी गूगल मीट प्लेटफ़ॉर्म पर सम्पन्न हुई तथा सृजन ऑस्ट्रेलिया व विश्व हिंदी सचिवालय के फ़ेसबुक पृष्ठ पर सीधा प्रसारित हुई। 1000 से अधिक प्रतिभागी कार्यक्रम से लाइव जुड़े थे।

साभार : सृजन ऑस्ट्रेलिया व विश्व हिंदी सचिवालय का फ़ेसबुक पृष्ठ

तुलसी साहित्य - एक परिचर्चा

18 अप्रैल, 2021 को भारत मॉरीशस डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म तथा विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा 'तुलसी साहित्य - एक परिचर्चा' ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. विनोद कुमार मिश्र, महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस को आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम भारत मॉरीशस डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म तथा विश्व हिंदी सचिवालय के फ़ेसबुक पृष्ठ पर लाइव स्ट्रीम हुआ और 2000 से अधिक प्रतिभागी कार्यक्रम से लाइव जुड़े थे।

साभार : भारतमॉरीशस डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म तथा विश्व हिंदी सचिवालय का फ़ेसबुक पृष्ठ

डॉ. नरेंद्र कोहली : स्मृतियों के आईने में

17 अप्रैल 2021 को प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार डॉ. नरेन्द्र कोहली का निधन हो गया। बड़े साहित्यकार होने के साथ-साथ आप विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद् के सदस्य भी रहे। 20 अप्रैल 2021 को डॉ. नरेन्द्र कोहली की स्मृति में विश्व हिंदी सचिवालय, न्यू मीडिया सृजन संसार ग्लोबल फ़ाउंडेशन एवं सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका के संयुक्त तत्वावधान में 'डॉ. नरेंद्र कोहली : स्मृतियों के आईने में' सभा का आयोजन किया गया। डॉ. कमल किशोर गोयनका, पूर्व उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, श्री अनिल जोशी, उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, श्री राहुल देव, वरिष्ठ पत्रकार एवं भाषाविद्, डॉ. प्रेम जनमेजय, प्रख्यात साहित्यकार, श्री अनंत विजय, वरिष्ठ पत्रकार, दैनिक जागरण, डॉ. उदय नारायण गंगू, विश्व हिंदी सचिवालय शासी परिषद् के सदस्य, श्री राज हीरामन, वरिष्ठ मॉरीशसीय साहित्यकार, प्रो. विनोद कुमार मिश्र, महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय एवं अन्य गण्यमान्य विभूतियों ने डॉ. नरेंद्र कोहली जी से जुड़ी स्मृतियाँ साझा कीं। श्रीमती सुनीता पाहूजा, द्वितीय सचिव (भाषा एवं संस्कृति), भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस ने संचालन किया और डॉ. शैलेश शुक्ल ने आभार प्रकट किया।

सभा गूगल मीट प्लेटफ़ॉर्म पर सम्पन्न हुई तथा सृजन ऑस्ट्रेलिया व विश्व हिंदी सचिवालय के फ़ेसबुक पृष्ठ पर लाइव प्रसारित हुई। 1000 से अधिक प्रतिभागियों ने उपस्थित होकर डॉ. कोहली को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

साभार : सृजन ऑस्ट्रेलिया व विश्व हिंदी सचिवालय का फ़ेसबुक पृष्ठ

'तनाव एवं मानसिक प्रबंधन' विषय पर अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

8 मई, 2021 को वैश्विक संकट की इस घड़ी में संघर्षरत मानव जाति के संबल को बढ़ाने के उद्देश्य से विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस, न्यू मीडिया सृजन संसार ग्लोबल फ़ाउंडेशन एवं सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका के संयुक्त तत्वावधान में 'तनाव एवं मानसिक प्रबंधन' विषय पर अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। आमंत्रित वक्ता डॉ. रमाशंकर व्यास (पुणे, महाराष्ट्र), श्रीमती सुनीता पाहूजा (मॉरीशस), डॉ. ओमकार नाथ शुक्ल (पुणे, महाराष्ट्र), श्रीमती अंजू घरभरन (मॉरीशस), श्रीमती कल्पना लालजी (मॉरीशस), श्रीमती आराधना श्रीवास्तव (सिंगापुर) रहे।

साभार : फ़ेसबुक

साहित्य-संवाद की गोष्ठियाँ

8 मई, 2021 को भारतीय उच्चायोग, विश्व हिंदी सचिवालय, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, साहित्य संवाद समिति मॉरीशस तथा राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, भारत, के संयुक्त तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह संगोष्ठी राष्ट्र गान रचयिता, महान दार्शनिक, साहित्यकार, विश्व विख्यात कवि, चित्रकार, संगीत प्रेमी एवं नोबल पुरस्कार विजेता गुरुदेव रबीन्द्रनाथ ठाकुर के 160 वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित की गई थी, जिसका विषय" रवींद्रनाथ ठाकुर : वैश्विक परिप्रेक्ष्य" रहा। विश्वभर से अनेक प्रतिभागियों ने भिन्न प्रकार से कार्यक्रम की धुरी गुरुवर ठाकुर को याद किया। 28 मई 2021 को भारतीय उच्चायोग, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, विश्व हिंदी सचिवालय, साहित्य संवाद समिति तथा सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका के संयुक्त तत्वावधान में मातृ दिवस के उपलक्ष्य में एक वेब गोष्ठी का आयोजन हुआ। प्रो. विनोद कुमार मिश्र की अध्यक्षता में 15 देशों के प्रतिभागियों ने"माँ भारती, मातृ भाषा, मातृ दिवस" विषय पर आधारित अपने उद्गार अथवा कविता-पाठ से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

21 जून, 2021 को भारतीय उच्चायोग, विश्व हिंदी सचिवालय, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र एवं साहित्य संवाद समिति के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में साहित्य संवाद का आयोजन किया गया। वेबिनार के दौरान कोविड 19 के परिप्रेक्ष्य में योग की प्रासंगिकता पर डॉ. कविता भट्ट द्वारा प्रस्तुति हुई तथा अनेक वक्तव्य प्रस्तुत किए गए। साथ ही विश्व हिंदी सचिवालय के कक्ष में डॉ. ज्ञानेश्वर सिंह गुदोई द्वारा स्थानीय युवाओं सहित योगासन प्रस्तुति दी गई। विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र की अध्यक्षता में तथा उपमहासचिव डॉ. माधुरी रामधारी एवं श्रीमती सुनीता पाहूजा के पूर्ण सहयोग से यह कार्यक्रम संपन्न हुआ।

साहित्य-संवाद की समन्वयक, श्रीमती अंजू घरभरन की रिपोर्ट

लोकार्पण

मॉरीशस के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर की 75वीं वर्षगाँठ पर अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी एवं पुस्तक लोकार्पण

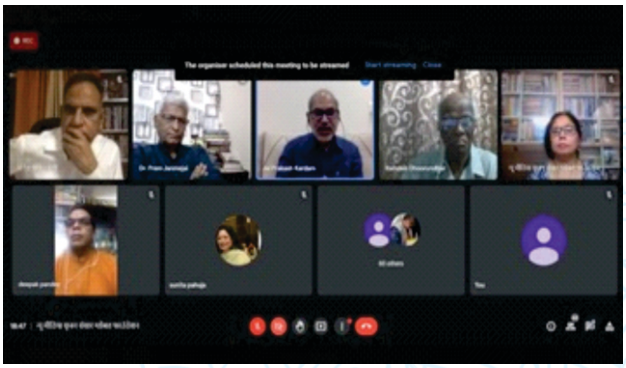

11 जून, 2021 को विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस तथा सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका के संयुक्त तत्वावधान में मॉरीशस के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर की 75वीं वर्षगाँठ के अवसर पर अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी एवं पुस्तक लोकार्पण का आयोजन किया गया। विश्व हिंदी सचिवालय के पूर्व महासचिव, प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने कार्यक्रम के दौरान श्री रामदेव धुरंधर की सृजनशीलता, हिंदी समर्पण एवं मॉरीशसीय हिंदी साहित्य में उनके अप्रतिम योगदान को रेखांकित किया। वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. हरीश नवल ने संस्मरण के माध्यम से धुरंधर जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर वक्तव्य दिया। साहित्यकार डॉ. जयप्रकाश कर्दम ने कहा कि श्री धुरंधर अपनी रचनाधर्मिता के कारण हिंदी जगत् में विशिष्ट पहचान बनाने में सफल हुए हैं। प्रख्यात व्यंग्यकार और 'व्यंग्य यात्रा' पत्रिका के संपादक डॉ. प्रेम जनमेजय ने श्री रामदेव धुरंधर की लेखन-शैली पर बात की तथा उनकी पुस्तक 'मॉरीशस लेखक रामदेव धुरंधर की ज़ुबानी' के साक्षात्कार पर टिप्पणी की। मुख्य अतिथि उद्बोधन में केंद्रीय शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष श्री अनिल शर्मा 'जोशी' ने गिरमिटिया देशों में लिखे जा रहे हिंदी साहित्य की उपादेयता पर अपने विचार रखे और गिरमिटिया देशों में हिंदी लेखन में युवाओं को प्रोत्साहित करने का आह्वान किया। डॉ. नूतन पाण्डेय ने धुरंधर जी के साहित्य के वैविध्य पर गंभीर विमर्श प्रस्तुत किया। इस अवसर पर डॉ. दीपक पाण्डेय की दो रचनाओं तथा डॉ. नूतन पाण्डेय और उनके संयुक्त संपादन में प्रकाशित पुस्तकों का विमोचन किया गया।

उसके पश्चात् श्री रामदेव धुरंधर कृत 'मॉरीशस लेखक रामदेव धुरंधर की ज़ुबानी', 'मॉरीशस लेखक रामदेव धुरंधर साक्षात्कार के आईने में' तथा 'रामदेव धुरंधर की रचनाधर्मिता' पुस्तक का लोकार्पण किया गया। श्री रामदेव धुरंधर ने कार्यक्रम के दौरान अपने जीवन संघर्षों और साहित्य के विभिन्न पड़ावों को साझा किया और अपने रचनाकर्म की प्रक्रिया पर भी जानकारी दी। अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री राज हीरामन ने धुरंधर जी की सृजनात्मक क्षमता और दक्षता की सराहना करते हुए उनके साहित्य पर सभी वक्ताओं के अभिमतों पर अपनी सहमति व्यक्त की। समारोह का संचालन सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका के संपादक डॉ. शैलेश शुक्ल ने किया। इस आभासी पटल के कार्यक्रम में सिंगापुर, अमेरिका, मॉरीशस, ब्रिटेन, सूरीनाम, त्रिनिडाड आदि देशों से प्रतिभागी शामिल हुए।

साभार : फ़ेसबुक

'साहित्य विमर्श श्रृंखला - पुस्तक लोकार्पण और चर्चा'

18 अप्रैल, 2021 को केंद्रीय हिंदी संस्थान और विश्व हिंदी सचिवालय के तत्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार की ओर से 'साहित्य विमर्श श्रृंखला - पुस्तक लोकार्पण और चर्चा' विषय पर वेब संगोष्ठी आयोजित की गई। इस अवसर पर अनिलप्रभा कुमार (यू.एस.ए.) कृत 'सितारों में सूराख' तथा वंदना मुकेश (यू.के.) कृत 'संकलित कहानियाँ' का लोकार्पण एवं पुस्तकों पर चर्चा हुई। भाषाविद् एवं साहित्य-मर्मज्ञ श्री विजय कुमार मल्होत्रा तथा साहित्यकार श्रीमती विजया सती वक्ता रहे। डॉ. पद्मेश गुप्त, साहित्यकार और अंतरराष्ट्रीय संयोजक, वैश्विक हिंदी परिवार का सान्निध्य रहा।

संगोष्ठी ज़ूम प्लेटफ़ॉर्म पर सम्पन्न हुई तथा वैश्विक हिंदी परिवार के फ़ेसबुक पृष्ठ तथा यूट्यूब पर लाइव प्रसारित हुई। 400 से अधिक प्रतिभागी कार्यक्रम से लाइव जुड़े थे।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार का फ़ेसबुक पृष्ठ तथा यूट्यूब

सम्मान एवं पुरस्कार

हिंदी लेखिका संघ का वार्षिक महोत्सव

17 मार्च, 2021 को हिंदी भवन, भोपाल में हिंदी लेखिका संघ द्वारा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के सौजन्य से संस्था का वार्षिक महोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पद्मश्री डॉ. कपिल तिवारी, सारस्वत अतिथि कैलाशचंद्र पंत रहे। हिंदी साहित्य को समर्पित इंदौर शहर की संस्था वामा साहित्य मंच की निधि जैन को रानी रूपमती और बाज़ बहादुर की प्रेम कहानी पर लिखे 'रेवा में बहते मयूर पंख' नामक उपन्यास के लिए 'श्यामलाल सोनी स्मृति पुरस्कार' और गरिमा दुबे को उनके कहानी-संग्रह, 'दो ध्रुवों के बीच' के लिए 'ब्रह्मदत्त तिवारी स्मृति पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

साथ ही, डॉ. विनय की अध्यक्षता एवं संस्था अध्यक्ष, अनीता सक्सेना के आतिथ्य में देश भर की हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में कार्य करने वाली 25 महिलाओं को उनकी उल्लेखनीय कृति के लिए सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया।

साभार : हिंदी.वेब दुनिया.कॉम

सूचना

इंजीनियरिंग की पढ़ाई हिंदी सहित 7 रीजनल भाषाओं में उपलब्ध

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (AICTE) ने कॉलिजों को नए अकादमिक साल (2020-21) से मराठी सहित आठ क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं, जिनमें हिंदी, बंगाली, तेलुगु, तमिल, गुजराती, कन्नड़ और मलयालम भाषा में इंजीनियरिंग की डिग्री देने की अनुमति दी है। पहले यह कोर्स केवल अंग्रेज़ी में दिया जाता रहा है। यह विशेष रूप से ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों के उम्मीदवारों हेतु एक महत्त्वपूर्ण पहल है। इस पहल को लेकर ए.आई.सी.टी.ई. के अध्यक्ष अनिल सहस्त्रबुद्धे ने कहा कि इसके पीछे छात्रों को उनकी मातृभाषा में तकनीकी शिक्षा प्रदान करना है, ताकि वे बुनियादी बातों को बेहतर तरीके से समझ पाएँ।

साभार : ए.बी.पी. लाइव.कॉम

संपादकीय

भावभीनी श्रद्धांजलि

दुनिया में कुछ भी स्थायी नहीं है। जो आज है, वह कल नहीं होगा। परिवर्तन प्रकृति का नियम है और संसार के सभी जीव इसी नियम के अधीन हैं। श्रीमद्भगवद् गीता के अनुसार *"जातस्य ही ध्रुवो मृत्युः"* - जिसने जन्म लिया, उसकी मृत्यु अवश्य होगी। मनुष्य का शरीर नश्वर है और मृत्यु जीवन का अटल सत्य है। कुरुक्षेत्र का युद्ध आरम्भ होने से पूर्व श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं – *"जिन्हें तुम सामने खड़े देख रहे हो, वे पहले भी बहुत बार रहे हैं। तू भी था और मैं भी था। हम सब बहुत बार थे और बहुत बार होंगे।"*

संसार की नियति से बंधे रहने के कारण मनुष्य को रोग-शोक, दुर्घटना, वृद्धावस्था, चिंता आदि विभिन्न कारणों से विवश होकर प्राण त्यागने पड़ते हैं। पिछले ढाई वर्षों में, हज़ारों की संख्या में लोग कोविड 19 महामारी के शिकार हुए। इसी कलावधि में कई समर्पित हिंदी सेवक भी कोरोना से संक्रमित होकर परलोक सिधार गए और हिंदी जगत् में भारी शून्यता छोड़ गए।

सन् 2021 के द्वितीय त्रैमासिक (अप्रैल 2021 – जून 2021) में कोविड 19 का कहर अपनी चरम सीमा में पहुँच गया और संसार के अनेक देशों में तालाबंदी हुई। इसी संकट-काल में हिंदी जगत् में भारी हलचल मचाने वाले कई हृदय-विदारक समाचार प्राप्त हुए। अप्रैल 2021 में नागरी लिपि परिषद् के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं अनुवादविद् डॉ. एच. बाल सुब्रमण्यम, हिंदी साहित्यकार डॉ. नरेंद्र कोहली, रचनाकार प्रो. शेरसिंह बिष्ट, लेखक श्री मंजुर एहतेशाम, कोशकार श्री अरविन्द कुमार और कवि व गीतकार डॉ. कुँवर बेचैन कोविड 19 की बीमारी के कारण इस धरती से विदा हुए। यह कल्पना भी नहीं की गयी थी कि एक ही महीने के भीतर हिंदी के कई सच्चे सेवक महामारी की कठिन परिस्थितियों में अचानक बिछड़ जाएँगे।

अपूर्णीय क्षति का यह क्रम मई 2021 में भी चलता रहा। विश्व हिंदी सचिवालय की पूर्व महासचिव श्रीमती पूनम जुनेजा, साहित्यकार श्री प्रभु जोशी, लेखक श्री सत्य प्रकाश असीम, नाटककार व आलोचक डॉ. नरेंद्र मोहन, कवयित्री रंजना श्रीवास्तव, कवि और आलोचक डॉ. क्षमा शंकर पांडेय तथा कवि पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी कोरोना महामारी की भेंट चढ़ गए। इन दुखद घटनाओं के कारण हिंदी जगत् गहरे दुख के अंधकार में डूब गया और समय रुकता हुआ-सा प्रतीत हुआ।

हिंदी कार्यकर्ताओं के विछोह पर आभासी मंच पर श्रद्धांजलि सभाएँ लगीं, जिनमें विश्व भर के लोग जुड़े और यह ज्ञात हुआ कि हिंदी के चर्चित कार्यकर्ता हिंदी समुदाय को अत्यधिक प्रिय थे। गंभीर संवेदना की अभिव्यक्ति हुई और अपने विचारों से एक-दूसरे के दुख को दूर करने की कोशिश की गई। दिवंगत आत्माओं की सद्गति के लिए प्रार्थना की गयी तथा हिंदी के भविष्य पर भी चिंतन किया गया।

यद्यपि मृत्यु अवश्यंभावी है, तथापि अपने ऊँचे कर्मों से मनुष्य अमरत्व प्राप्त करता है। महामारी की चपेट में आने वाले हिंदी सेवकों ने अपने जीवन-काल में हिंदी की उन्नति हेतु जी-जान से कार्य किया। अपनी कलम से हिंदी को सजाया और सँवारा। श्रेष्ठ पुस्तकों का सृजन किया। इनमें से किसी ने हिंदी साहित्य को गति दी, किसी ने अनुवाद अथवा आलोचना के क्षेत्र में अपना महती योगदान दिया, किसी ने हिंदी पत्रकारिता अथवा कोशकारिता को नयी दिशा दी, तो किसी ने हिंदी प्रचार की गतिविधियों में अपनी सक्रियता द्वारा भाषा को विकसित किया। अनगिनत चुनौतियों का सामना करते हुए और नित्य संघर्ष करने के बाद ही उन्होंने हिंदी जगत् में अपनी पहचान बनायी। हिंदी के प्रति उनकी कटिबद्धता को नमन करते हुए, आज उन्हें श्रद्धा-सुमन अर्पित किया जा रहा है।

जो चला गया, वह वापस लौटकर नहीं आएगा। देहावसान के बाद उपर्युक्त हिंदी कर्मी शारीरिक रूप से फिर से कभी नहीं दिखेंगे। उनकी अनुपस्थिति अखरती रहेगी, परन्तु प्रत्येक हिंदी प्रेमी के दिल में और यादों में वे जीवित रहेंगे। उनकी स्मृति से हिंदी जगत् समृद्ध रहेगा। उनकी स्मृति में ही विश्व हिंदी सचिवालय उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए त्रैमासिक सूचना-पत्र - 'विश्व हिंदी समाचार' का विशेषांक प्रकाशित कर रहा है। आशा है कि संवेदनशील पाठक विशेषांक में दिवंगत हिंदी सेवकों के जीवन और कर्मों का परिचय पाकर हिंदी के हित में कार्य करने की प्रेरणा प्राप्त करेंगे और हिंदी की अलख जगाते रहेंगे।

डॉ. माधुरी रामधारी
उपमहासचिव

संपादक : डॉ. माधुरी रामधारी
सहायक संपादक : श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी
टंकण टीम : श्रीमती त्रिशिला आपेगाडु, श्रीमती जयश्री सिबालक-रामसर्न, श्रीमती विजया सरजु
पता : विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस
World Hindi Secretariat, Independence Street, Phoenix 73423, Mauritius

फ़ोन : (230) 660 0800
ई-मेल : info@vishwahindi.com
वेबसाइट : www.vishwahindi.com
डेटाबेस : www.vishwahindidb.com
फ़ेसबुक : www.facebook.com/groups/vishwahindisachivalay/
ट्विटर : @WHSMauritius
इंस्टाग्राम : WHS_08